28 कलिमाते कुफ़्र

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुजु़र्गी वाले।

(اَلْمُستطرَف ج۱ص۴۰ دارالفکر بیروت)

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।)

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)।

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

28 कलिमाते कुफ़्र

येह रिसाला (**28 कलिमाते कुफ़्र**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translastionmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

28 कलिमाते कुफ़्र

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (14 सफ़ह़ात) अव्वल ता आख़िर पढ़ कर ईमान की ह़िफ़ाज़त का सामान कीजिये ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत **दुरूद**

शरीफ़ पढ़े होंगे ।

(اَلْفِرْدَوْس بماْثور الْخَطّاب ج۵ص۲۷۷ حديث ۸۱۷۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तंगदस्ती, बीमारी, परेशानी और फ़ौतगी के मवाक़ेअ़ पर बा'ज़ लोग सदमे या इश्तिआ़ल (या'नी जज़्बातियत) के सबब बसा अवक़ात نَعُوْذُ بِالله कुफ़्रिय्या कलिमात बक देते हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ करना, उस को ज़ालिम या ज़रूरत मन्द या मोह़ताज या आ़जिज़ समझना या कहना येह सब **खुले कुफ़्र** हैं । याद रखिये ! बिला इक्राहे शर-ई होशो ह़वास में सरीह़ या'नी **खुला कुफ़्र** बकने वाला और मा'ना समझने के बा वुजूद हां में हां मिलाने वाला बल्कि ताईद में सर हिलाने वाला भी **काफ़िर** हो जाता है, उस का **निकाह़** टूट जाता, **बैअ़त** ख़त्म हो जाती और ज़िन्दगी भर के **नेक आ'माल** बरबाद हो जाते हैं, अगर **ह़ज** कर लिया था तो वोह भी गया, अब बा'दे तज्दीदे ईमान (या'नी नए सिरे से मुसल्मान होने के बा'द) साह़िबे इस्तिताअ़त होने (या'नी शराइत़ पाए जाने) पर नए सिरे से **ह़ज** फ़र्ज़ होगा ।

मुश्किलात के वक़्त बके जाने वाले कुफ़्रिय्यात की मिसालें

﴾1﴿ बत़ौरे ए'तिराज़ कहना : वोह शख़्स लोगों के साथ कुछ भी करे **अल्लाह** की त़रफ़ से उस को फुल (FULL) आज़ादी है ﴾2﴿ बत़ौरे ए'तिराज़ यूं कहना : कभी हम फुलां के साथ थोड़ा कुछ कर लें, **अल्लाह** हमें फ़ौरन पकड़ लेता है ﴾3﴿ **अल्लाह** ने हमेशा मेरे दुश्मनों का साथ दिया है ﴾4﴿ हमेशा सब कुछ **अल्लाह** पर छोड़ कर भी देख लिया कुछ नहीं होता ﴾5﴿ **अल्लाह** ने मेरी क़िस्मत अभी तक तो ज़रा अच्छी नहीं बनाई ﴾6﴿ शायद उस के ख़ज़ाने में मेरे लिये कुछ भी नहीं, मेरी दुन्यावी ख़्वाहिशात कभी पूरी नहीं हुईं, ज़िन्दगी भर मेरी कोई दुआ़ क़बूल नहीं हुई, जिस को चाहा वोह दूर चला गया, हर ख़्वाब मेरा टूटा, तमाम अरमान कुचले गए, अब आप ही बताएं मैं **अल्लाह** पर कैसे ईमान लाऊं ? ﴾7﴿ एक शख़्स ने हमारी नाक में दम कर रखा है, मज़े की बात येह है कि **अल्लाह** भी ऐसों के साथ होता है ﴾8﴿ जिस शख़्स ने मुसीबतें पहुंचने पर कहा : ऐ **अल्लाह !** तूने माल ले लिया, फुलां चीज़ ले ली,

अब क्या करेगा ? या अब क्या चाहता है ? या अब क्या बाक़ी रह गया ? येह क़ौल **कुफ़्र** है ﴿9﴾ जो कहे : "**अल्लाह** ने मेरी बीमारी और बेटे की मशक़्क़त के बा वुजूद अगर मुझे अ़ज़ाब दिया तो उस ने मुझ पर ज़ुल्म किया।" येह कहना **कुफ़्र** है। (اَلْبَحرُ الرَّائق ج٥ ص ٢٠٩) ﴿10﴾ **अल्लाह** ने हमेशा बुरे लोगों का साथ दिया ﴿11﴾ **अल्लाह** ने मजबूरों को और परेशान किया है।

तंगदस्ती के बाइस बके जाने वाले कुफ़्रिय्यात की मिसालें

﴿12﴾ जो कहे : "ऐ **अल्लाह !** मुझे रिज़्क़ दे और मुझ पर तंगदस्ती डाल कर ज़ुल्म न कर।" ऐसा कहना **कुफ़्र** है। (فتاوی قاضی خان ج ٣ ص٤٦٧) ﴿13﴾ बा'ज़ लोग जो इज़ालए क़र्ज़ व तंगदस्ती या दौलत की ज़ियादती के लिये कुफ़्फ़ार के यहां नोकरी की ख़ातिर या **वीज़ा फ़ोर्म** पर या किसी त़रह़ की रक़म वग़ैरा की बचत के लिये दर-ख़्वास्त पर ख़ुद को ईसाई (क्रिस्चेन), यहूदी, क़ादियानी या किसी भी काफ़िर व मुरतद गुरौह का "फ़र्द" लिखते या लिखवाते हैं उन पर हुक्मे कुफ़्र है ﴿14﴾ किसी से माली मदद की दर-ख़्वास्त करते हुए कहना या

लिखना कि अगर आप ने काम न कर दिया तो मैं क़ादियानी या ईसाई (क्रिस्चेन) बन जाऊंगा। ऐसा कहने वाला फ़ौरन काफ़िर हो गया। यहां तक कि अगर कोई कहे कि मैं **100** साल के बा'द काफ़िर हो जाऊंगा वोह अभी से **काफ़िर** हो गया ﴾**15**﴿ किसी ने मश्वरा दिया कि काफ़िर हो जाओ तो वोह काफ़िर बने या न बने मश्वरा देने वाले पर हुक्मे कुफ़्र है। नीज़ किसी ने कुफ़्र बका इस पर राज़ी होने वाले पर भी हुक्मे कुफ़्र है, क्यूं कि कुफ़्र को पसन्द करना भी **कुफ़्र** है ﴾**16**﴿ अगर वाक़ेई **अल्लाह** होता तो ग़रीबों का साथ देता, मक़रूज़ों का सहारा होता।

ए'तिराज़ की सूरत में बके जाने वाले कुफ़्रिय्यात की मिसालें

﴾**17**﴿ मुझे नहीं मा'लूम **अल्लाह** ने जब मुझे दुन्या में कुछ न दिया तो मुझे पैदा ही क्यूं किया ! येह क़ौल **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص ٥٢١) ﴾**18**﴿ किसी मिस्कीन ने अपनी मोहताजी को देख कर येह कहा **: या अल्लाह !** फुलां भी तेरा बन्दा है, उसे तूने कितनी ने'मतें दे रखी हैं और एक मैं भी तेरा बन्दा हूं मुझे

किस क़दर रन्जो तक्लीफ़ देता है। आख़िर येह क्या इन्साफ़ है? (عالمگیری ج ۲ ص ۲۶۲) ﴾19﴿ कहते हैं : **अल्लाह** सब्र करने वालों के साथ है, मैं कहता हूं येह सब बक्वास है ﴾20﴿ जिन लोगों को मैं प्यार करता हूं वोह परेशानी में रहते हैं और जो मेरे दुश्मन होते हैं **अल्लाह** उन को बहुत ख़ुशहाल रखता है ﴾21﴿ काफ़िरों और मालदारों को राह़तें और ग़रीबों और नादारों पर आफ़तें ! बस जी **अल्लाह** के घर का तो सारा निज़ाम ही उलटा है ﴾22﴿ अगर किसी ने बीमारी, बे रोज़गारी, ग़ुरबत या किसी मुसीबत की वजह से **अल्लाह** पर ए'तिराज़ करते हुए कहा : "ऐ मेरे रब ! तू मुझ पर क्यूं ज़ुल्म करता है ? ह़ालां कि मैं ने तो कोई गुनाह किया ही नहीं।" तो वोह **काफ़िर** है।

फ़ौतगी के मौक़अ़ पर बके जाने वाले कुफ़्रिय्यात की मिसालें

﴾23﴿ किसी की मौत हो गई इस पर दूसरे शख़्स ने कहा : **अल्लाह** को ऐसा नहीं करना चाहिये था। ﴾24﴿ किसी का बेटा फ़ौत हो गया, उस ने कहा : "**अल्लाह** को

इस की ह़ाजत होगी" येह क़ौल कुफ़्र है क्यूं कि कहने वाले ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मोह़ताज क़रार दिया । (فتاوٰی بزاریہ مع عالمگیری ج ٦ ص ٣٤٩) ﴾25﴿ किसी की मौत पर आ़म तौ़र पर बक देते हैं : **अल्लाह** को न जाने इस की क्या ज़रूरत पड़ गई जो जल्दी बुला लिया या कहते हैं : **अल्लाह** को भी नेक लोगों की ज़रूरत पड़ती है इस लिये जल्द उठा लेता है (येह सुन कर मा'ना समझने के बा वुजूद उ़मूमन लोग हां में हां मिलाते या ताईद में सर हिलाते हैं इन सब पर भी हुक्मे **कुफ़्र** है) ﴾26﴿ किसी की मौत पर कहा : **या अल्लाह !** इस के छोटे छोटे बच्चों पर भी तुझे तर्स न आया ! ﴾27﴿ जवान मौत पर कहा : **या अल्लाह !** इस की भरी जवानी पर ही रह़्म किया होता । अगर लेना ही था तो फुलां बुड्ढे या बुढ़िया को ले लेता ﴾28﴿ **या अल्लाह !** आख़िर इस की ऐसी क्या ज़रूरत पड़ गई कि अभी से वापस बुला लिया ।

तज्दीदे ईमान (या'नी नए सिरे से मुसल्मान होने) का त़रीक़ा

कुफ़्र से तौबा उसी वक़्त मक़्बूल होगी जब कि वोह

उस **कुफ़्र** को **कुफ़्र** तस्लीम करता हो और दिल में उस **कुफ़्र** से नफ़रत व बेज़ारी भी हो। जो **कुफ़्र सरज़द हुवा तौबा में उस का तज़्किरा भी हो।** म–सलन जिस ने वीज़ा फ़ोर्म पर अपने आप को **क्रिस्चेन** लिख दिया वोह इस त़रह़ कहे : **"या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मैं ने जो वीज़ा फ़ोर्म में अपने आप को क्रिस्चेन ज़ाहिर किया है इस कुफ़्र से तौबा करता हूं।"** तौबा के बा'द पढ़िये : لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं) इस त़रह़ मख़्सूस **कुफ़्र** से तौबा भी हो गई और **तज्दीदे ईमान** (या'नी नए सिरे से मुसल्मान होना) भी। अगर مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कई **कुफ़्रिय्यात** बके हों और याद न हो कि क्या क्या बका है तो यूं कहे : **"या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मुझ से जो जो कुफ़्रिय्यात सादिर हुए हैं मैं उन से तौबा करता हूं।"** फिर कलिमा पढ़ ले। (अगर कलिमा शरीफ़ का तरजमा मा'लूम है तो ज़बान से तरजमा दोहराने की ह़ाजत नहीं) अगर येह मा'लूम ही नहीं कि **कुफ़्र** बका भी है या नहीं तब भी

अगर एहतियातन **तौबा** करना चाहें तो इस तरह कहिये : **"या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! अगर मुझ से कोई कुफ़्र हो गया हो तो मैं उस से तौबा करता हूं ।"** येह कहने के बा'द **कलिमा** पढ़ लीजिये । (सभी को रोज़ाना बल्कि वक़्तन फ़ वक़्तन कुफ़्र से एहतियाती तौबा करते रहना चाहिये)

तज्दीदे निकाह़ का त़रीक़ा

तज्दीदे निकाह़ का मा'ना है : "नए महर से नया **निकाह़** करना ।" इस के लिये लोगों को इकठ्ठा करना ज़रूरी नहीं । **निकाह़** नाम है ईजाब व क़बूल का । हां ब वक़्ते निकाह़ बतौरे गवाह कम अज़ कम दो[2] मर्द मुसलमान या एक मर्द मुसलमान और दो[2] मुसलमान औरतों का ह़ाज़िर होना लाज़िमी है । **ख़ुत़्बए निकाह़** शर्त़ नहीं बल्कि मुस्तह़ब है । ख़ुत़्बा याद न हो तो **اَعُوْذُ بِاللّٰه** और **بِسْمِ الله** शरीफ़ के बा'द **सूरए फ़ातिह़ा** भी पढ़ सकते हैं । कम अज़ कम दस दिरहम या'नी **दो तोला साढ़े सात माशा चांदी** (मौजूदा वज़्न के ह़िसाब से 30 ग्राम 618 मिली ग्राम चांदी) या उस की रक़म **महर** वाजिब है । म-सलन आप ने पाकिस्तानी

786 रुपै **उधार मह्‌र** की निय्यत कर ली है (मगर येह देख लीजिये कि मह्‌र मुक़र्रर करते वक़्त मज़्कूरा चांदी की क़ीमत 786 पाकिस्तानी रुपै से ज़ाइद तो नहीं) तो अब मज़्कूरा गवाहों की मौजू-दगी में आप ''ईजाब'' कीजिये या'नी औ़रत से कहिये : ''मैं ने 786 पाकिस्तानी रुपै **मह्‌र** के बदले आप से **निकाह़** किया।'' औ़रत कहे : ''मैं ने क़बूल किया।'' **निकाह़** हो गया। (तीन[3] बार ईजाब व क़बूल ज़रूरी नहीं अगर कर लें तो बेहतर है) येह भी हो सकता है कि **औ़रत** ही ख़ुत़्बा या **सूरए फ़ातिह़ा** पढ़ कर ''ईजाब'' करे मर्द कह दे : ''मैं ने क़बूल किया,'' **निकाह़** हो गया। बा'दे **निकाह़** अगर औ़रत चाहे तो **मह्‌र** मुआ़फ़ भी कर सकती है। मगर मर्द बिला ह़ाजते शर-ई औ़रत से **मह्‌र** मुआ़फ़ करने का सुवाल न करे।

म-दनी फूल जिन सूरतों में निकाह़ ख़त्म हो जाता है म-सलन सरीह़ या'नी **खुला कुफ़्र** बका और मुरतद हो गया तो तज्दीदे निकाह़ में **मह्‌र** वाजिब है, अलबत्ता एह़तियाती तज्दीदे निकाह़ में **मह्‌र** की ह़ाजत नहीं।

तम्बीह मुरतद हो जाने के बा'द तौबा व तज्दीदे ईमान से क़ब्ल जिस ने निकाह़ किया उस का **निकाह़** हुवा ही नहीं ।

निकाहे़ फ़ुज़ूली का त़रीक़ा

औ़रत को बेशक ख़बर तक न हो और कोई शख़्स मर्द से मज़्कूरा गवाहों की मौजू-दगी में औ़रत की त़रफ़ से "ईजाब" कर ले । म-सलन कहे : मैं ने 786 रुपै उधार महर के बदले फ़ुलाना बिन्ते फ़ुलां बिन फ़ुलां का तुझ से निकाह़ किया, मर्द कहे मैं ने क़बूल किया येह **निकाहे़ फ़ुज़ूली** हो गया, फिर औ़रत को इत्तिलाअ़ की गई या दूल्हा ने ख़ुद बताया और उस ने क़बूल कर लिया, तो **निकाह़** हो गया, मर्द भी "ईजाब" कर सकता है । **निकाहे़ फ़ुज़ूली** ह़-नफ़िय्यों के यहां जाइज़ है मगर ख़िलाफ़े औला है । अलबत्ता शाफ़िइय्यों, मालिकिय्यों और ह़म्बलिय्यों के यहां बाति़ल है ।

अ़ज़ाबे जहन्नम की झल्कियां

जिस से مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ **कुफ़्र** सादिर हो गया उसे चाहिये कि दलाइल में उलझने के बजाए फ़ौरन **तौबा** करे। مَعَاذَاللہ जिस का ख़ातिमा **कुफ़्र** पर होगा वोह हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम में रहेगा। चाहे दुन्या में ब ज़ाहिर वोह नेक नमाज़ी और तहज्जुद गुज़ार व परहेज़ गार ही क्यूं न रहा हो ! ख़ुदा की क़सम ! जहन्नम का अ़ज़ाब कोई भी बरदाश्त नहीं कर सकता। **कुफ़्र की मौत** मरने वालों को **लोहे** के ऐसे भारी गुर्ज़ों (या'नी हथोड़ों) से फ़िरिश्ते मारेंगे कि अगर कोई गुर्ज़ (या'नी हथोड़ा) ज़मीन पर रख दिया जाए तो तमाम जिन्नो इन्स (या'नी जिन्नात व इन्सान) जम्अ़ हो कर भी उस को उठा नहीं सकते। **बुख़्ती ऊंट** (या'नी एक क़िस्म के ऊंट जो सब ऊंटों से बड़े होते हैं) की गरदन बराबर **बिच्छू** और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जाने किस क़दर बड़े बड़े **सांप** कि अगर एक मर्तबा काट लें तो उस की सोज़िश, दर्द, बेचैनी **चालीस**[40] **बरस** तक रहे।

सर पर **गर्म** पानी बहाया जाएगा । जहन्नमिय्यों के बदन से जो **पीप** बहेगी वोह पिलाई जाएगी । ख़ारदार (या'नी कांटेदार) **थूहर** खाने को दिया जाएगा, वोह ऐसा होगा कि अगर उस का एक क़त़रा दुन्या में आ जाए तो उस की सोज़िश (या'नी जलन) व बदबू तमाम अहले दुन्या की मईशत (या'नी ज़िन्दगानी) बरबाद कर दे और वोह गले में जा कर फन्दा डालेगा । उस के उतारने के लिये पानी मांगेंगे तो उन को तेल की **तल्छट** की त़रह़ **सख़्त खौलता पानी** दिया जाएगा कि मुंह के क़रीब आते ही मुंह की सारी **खाल** गल कर उस में गिर पड़ेगी और पेट में जाते ही **आंतों** को टुकड़े टुकड़े कर देगा और वोह शोरबे की त़रह़ बह कर क़दमों की त़रफ़ निकलेंगी ।

ईमान की ह़िफ़ाज़त का विर्द

सुब्ह़ व शाम तीन तीन बार पढ़ने से, दीनो ईमान, जान, माल, बच्चे, सब मह़फ़ूज़ रहें ।

(आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह़ और इब्तिदाए वक़्ते ज़ोह्र ता ग़ुरूबे आफ़्ताब शाम कहलाती है)

नोट : इस रिसाले में आप ने मुख़्तसरन **28 कुफ़्रिय्यात** की मिसालें मुला-ह़ज़ा कीं मज़ीद बे शुमार कुफ़्रिय्या कलिमात की मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"** मुला-ह़ज़ा कीजिये ।

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़्रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ"** अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुधोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना ®
दा'वते इस्लामी
مكتبة المدينة

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabahind@gmail.com www.dawateislami.net